vinetur

2018 के बाद से 50 से 64 वर्ष के अमेरिकियों में अत्यधिक मद्यपान 36% से अधिक बढ़ा

50 से 64 वर्ष के अमेरिकियों में अत्यधिक मद्यपान 2018 से 36% से अधिक बढ़ा है। मोटापा और मधुमेह शराब-संबंधी यकृत रोग का खतरा बढ़ा सकते हैं।

बुधवार, 7 अक्टूबर 2026



नए सर्वेक्षण आंकड़ों और Keck Medicine of USC में हेपेटोलॉजिस्ट तथा यकृत प्रत्यारोपण विशेषज्ञ Brian P. Lee की टिप्पणियों के अनुसार, अमेरिका में शराब-संबंधी यकृत रोग के मामले कई वर्षों तक बढ़ते रह सकते हैं, भले ही देश में शराब का सेवन घटने लगे।

यह चेतावनी National Health Interview Survey के 114,352 प्रतिभागियों के विश्लेषण पर आधारित है, जो 22 सितंबर को Annals of Internal Medicine में ऑनलाइन प्रकाशित हुआ। अध्ययन में पाया गया कि 50 से 64 वर्ष के वयस्कों में अत्यधिक मद्यपान 2018 से 2024 के बीच 36% से अधिक बढ़ा। इसी दौरान, 2022 से 2024 के बीच देशभर में अत्यधिक मद्यपान 8% से अधिक घटा। यह COVID-19 महामारी के दौरान और उसके बाद देखी गई वृद्धि के बाद आई गिरावट थी। अध्ययन अवधि में 50 से 64 वर्ष के वयस्कों में किसी भी मात्रा में शराब का सेवन भी लगभग 4% बढ़ा, जबकि देशव्यापी गिरावट का बड़ा हिस्सा Gen Z और मिलेनियल पीढ़ी के युवा वयस्कों के व्यवहार में बदलाव से आया।

Lee ने कहा कि कुल शराब सेवन में गिरावट को इस संकेत के रूप में नहीं देखना चाहिए कि शराब से होने वाला नुकसान

भी जल्द ही उसी गति से घटेगा। HCPLive ने बुधवार को प्रकाशित एक साक्षात्कार में उनके हवाले से बताया कि शराब-संबंधी यकृत रोग का बोझ कई वर्षों तक बढ़ने की आशंका है, क्योंकि यकृत को हुआ नुकसान अक्सर उस शराब सेवन के काफी समय बाद सामने आता है जिसके कारण वह हुआ था। उन्होंने कहा कि मौजूदा रुझान खास तौर पर चिंताजनक है, क्योंकि वृद्धि उस आयु वर्ग में केंद्रित है जिसमें निकट भविष्य में गंभीर यकृत रोग होने की आशंका सबसे अधिक है, जबकि गिरावट युवा वयस्कों में है, जिनमें अगले पांच वर्षों के भीतर सिरोसिस के साथ अस्पताल पहुंचने की संभावना कम है।

यह देरी डॉक्टरों और स्वास्थ्य सेवाओं के लिए अहम है। Lee ने कहा कि चिकित्सकों को युवा वयस्कों के बजाय 50 वर्ष की उम्र के मरीज अधिक दिख सकते हैं और इन मरीजों के शुरुआती चरण के फैटी लिवर रोग के बजाय सिरोसिस के साथ पहली बार निदान के लिए पहुंचने की आशंका अधिक हो सकती है। उन्होंने यह भी कहा कि ऐसे मामलों में महिलाओं की हिस्सेदारी पहले से बढ़ सकती है। Lee के अनुसार, समान मात्रा में शराब पीने पर भी युवा वयस्कों की तुलना में अधिक उम्र के लोगों को यकृत रोग, कुछ कैंसर और हृदय रोगों का खतरा अधिक होता है।

चिंता केवल इस बात की नहीं है कि लोग कितना पीते हैं, बल्कि यह भी है कि कौन पी रहा है और उसे पहले से कौन-सी स्वास्थ्य समस्याएं हैं। Lee ने कहा कि हर पेय से होने वाला नुकसान बढ़ता दिख रहा है, क्योंकि अब बहुत-से अत्यधिक शराब पीने वालों में मोटापा, मधुमेह या उच्च रक्तचाप भी है—ऐसी स्थितियां जो दो दशक पहले कम आम थीं। उनके अनुसार, शराब और चयापचय संबंधी गड़बड़ी यकृत पर केवल अलग-अलग प्रभाव जोड़ती नहीं हैं, बल्कि एक-दूसरे के असर को बढ़ा सकती हैं। इसका मतलब है कि अत्यधिक शराब सेवन और चयापचय रोग से ग्रस्त व्यक्ति को केवल उसके शराब सेवन के स्तर से अनुमानित खतरे की तुलना में कहीं अधिक जोखिम हो सकता है।

यह मेल इतना अहम हो गया है कि चिकित्सक अब MetALD शब्द का इस्तेमाल करते हैं। इससे आशय ऐसे यकृत रोग से है जिस पर चयापचय संबंधी गड़बड़ी और शराब सेवन, दोनों का असर पड़ता है। Lee ने कहा कि चिकित्सकों को शराब सेवन के इतिहास का आकलन कमर के माप और हीमोग्लोबिन A1c जैसे संकेतकों के साथ करना चाहिए, न कि उसे अलग से देखना चाहिए। व्यापक संदेश यह है कि देशभर के औसत में गिरावट से मरीजों के एक छोटे और अधिक उम्र वाले समूह में बढ़ते खतरे का पता नहीं चल सकता।

Lee ने कहा कि मौजूदा रोकथाम प्रयास अक्सर इस समूह तक नहीं पहुंचते। उनके अनुसार, शराब के नुकसान से जुड़े जनसंदेश मुख्य रूप से युवाओं को ध्यान में रखकर तैयार किए गए हैं, जबकि ताजा आंकड़े बताते हैं कि युवा वयस्क पहले से अपना व्यवहार बदल रहे हैं। उन्होंने कहा कि 50 से 64 वर्ष के वयस्क इन प्रयासों में कहीं कम दिखाई देते हैं, जबकि उनमें जोखिम की दिशा इसके उलट बढ़ती दिख रही है। उन्होंने कहा कि इस आयु वर्ग के बहुत-से लोगों की रक्तचाप, मधुमेह और कैंसर जांच के लिए नियमित चिकित्सकीय मुलाकातों में शराब सेवन की जांच भी शामिल होनी चाहिए। जोखिम भरे स्तर तक शराब पीने वाले मरीजों में यकृत फाइब्रोसिस की जांच भी की जानी चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि महिलाओं को जोखिमपूर्ण शराब सेवन की सीमा को लेकर अधिक स्पष्ट और लिंग-विशिष्ट मार्गदर्शन की जरूरत है।

Lee का अनुमान है कि शराब-संबंधी यकृत रोग का कुल बोझ शायद अभी चरम पर नहीं पहुंचा है। उन्होंने इसके तीन कारण बताए : शराब सेवन और सिरोसिस के बीच समय का अंतर, गंभीर यकृत रोग की आशंका वाली आयु के लोगों में बढ़ते शराब सेवन का केंद्रित होना, और इसी आबादी में चयापचय संबंधी जोखिमों का बढ़ना। उन्होंने कहा कि अगर युवा वयस्कों में शराब सेवन घटता रहा तो उनमें शराब-संबंधी तीव्र हेपेटाइटिस के मामले शायद चरम के करीब हों, लेकिन 50 वर्ष से अधिक उम्र के वयस्कों में सिरोसिस और यकृत कैंसर के मामले दशक के अंत तक बढ़ते रहने की आशंका है। उनके अनुसार, कुल बोझ पांच साल के भीतर चरम पर पहुंचेगा या इसके करीब 10 साल लगेंगे, यह काफी हद तक इस बात पर निर्भर करेगा कि 50 से 64 वर्ष के लोगों में मौजूदा रुझान पलटता है या नहीं। उन्होंने कहा कि उपलब्ध आंकड़ों में फिलहाल ऐसा होने के संकेत नहीं हैं।

दांव ऊंचे हैं। Lee ने कहा कि यकृत रोग से होने वाली कुल मौतों में लगभग आधी का संबंध शराब से है और शराब-संबंधी सिरोसिस अब यकृत प्रत्यारोपण का प्रमुख कारण है। ये आंकड़े बताते हैं कि कुल शराब सेवन में गिरावट

स्वागतयोग्य होने के बावजूद गंभीर यकृत रोग के मामलों में तत्काल कमी क्यों नहीं ला सकती।

अधिक उम्र के वयस्कों की ओर जोखिम का यह बदलाव वाइन, बीयर और स्पिरिट्स को लेकर चल रही बहस को भी प्रभावित कर सकता है। जनस्वास्थ्य अभियानों और जिम्मेदारी से शराब पीने के कई संदेशों में अक्सर युवा उपभोक्ताओं के अत्यधिक शराब सेवन पर ध्यान दिया गया है। यदि शराब से होने वाला नुकसान 50 और 60 वर्ष की शुरुआती उम्र के लोगों में अधिक केंद्रित हो रहा है, तो पेय कंपनियों, व्यापार संगठनों और नियामकों पर चेतावनी संदेशों, जागरूकता प्रयासों और जांच से जुड़ी साझेदारियों में बदलाव का दबाव पड़ सकता है, ताकि अधेड़ उम्र के लोगों के जोखिमों को भी ध्यान में रखा जाए—खासकर मोटापे, मधुमेह या उच्च रक्तचाप से ग्रस्त लोगों के।

Lee की टिप्पणियां उनके पहले के शोध से भी मेल खाती हैं। नवंबर 2024 में प्रकाशित उनके एक अध्ययन में पाया गया था कि महामारी के दौरान शराब सेवन बढ़ा और अगले दो वर्षों तक भी बढ़ता रहा। नया राष्ट्रीय विश्लेषण बताता है कि देश में कुल शराब सेवन अब उस चरम से नीचे आ रहा हो सकता है, लेकिन महामारी के दौर में हुई वृद्धि के चिकित्सकीय परिणाम गंभीर यकृत रोग के प्रति सबसे अधिक संवेदनशील आबादी में अब भी सामने आ सकते हैं।

HCPLive ने बताया कि साक्षात्कार के प्रतिलेख को कृत्रिम बुद्धिमत्ता उपकरणों की मदद से व्याकरण और स्पष्टता के लिए संपादित किया गया था। प्रकाशन ने यह भी बताया कि Lee ने Gilead Sciences, Novo Nordisk, GlaxoSmithKline, Altimmune और Bausch Health समेत कई दवा कंपनियों के लिए परामर्श दिया है।